20.4.2020 का होमवर्क -

चीन में एक दल ऐसे लोगों का था जो वहाँ सम्पूर्ण व्यवस्था में सुधार चाहते थे। 1888 में ही सम्राट के पास एक ज्ञापन दिया गया था। दूसरा ज्ञापन 1895 में दिया गया। 1894 में सम्राट ने सुधार के सम्बन्ध में 40 आदेश भी दिए। इन आदेशों में प्रशासन को सुधारने, शिक्षा प्रणाली को आधुनिक बनाने, अर्थव्यवस्था और यातायात में सुधार करने की बातें शामिल थीं। लेकिन जैसा कि और भी सामंतवादी समाज वाले देशों में हुआ है चीन के रूढ़िवादी इन सुधारों का विरोध करने लगे। इन लोगों ने राजमाता त्सुशी का साथ लिया और सम्राट को हटाने का षड्यंत्र होने लगा। इसका नेता युआन शिकाई था जिन्होंने बाद में धोखा देकर सम्राट को गिरफ्तार भी कर लिया। सुधार के सभी कार्यक्रम रद्द कर दिए गए। अब सत्ता ऐसे लोगों के हाथ में आ गई जो घोर रूढ़िवादी और प्रतिक्रियावादी थे। जब सुधार से कोई व्यवस्था नहीं बदलती तो उसका विकल्प विद्रोह होता है। 1900 ई० का बॉक्सर विद्रोह इसी विकल्प के रूप में आया।

Scanned with CamScanner

राजमाता ने सुधारवादी कार्यक्रम तो रद्द कर दिया। उसके आन्दोलन को दबा दिया, लेकिन वह विदेशियों के शोषण को रोक नहीं सकी। जहाँ तक विदेशियों के विरोध का सवाल था इसमें अधिकारी भी सम्मिलित थे। सरकार ने भी इन्हें खुश करने के लिए कुछ कारवाइयाँ की। 1898 ई० में एक आज्ञापत्र जारी कर रेल मार्ग में पड़ने वाले स्थानों की विदेशियों द्वारा खुदाई करने और उनसे माल निकालने पर प्रतिबंध लगा दिया। चीन की सरकार के पास इन विदेशियों को अनुशासित करने की ताकत नहीं थी। अतः जनता ने स्वतः अपने हाथों में यह कार्य ले लिया। बॉक्सर विद्रोह इसका भी एक कारण हुआ।

बॉक्सर विद्रोह का तात्कालिक और सबसे प्रभावपूर्ण कारण चीन में ईसाई मिशनरियों द्वारा किया जाने वाला कार्यक्रम था। बहुत बड़ी संख्या में ईसाई मिशनरी चीन में फैले हुए थे और वे लोगों को ईसाई बना रहे थे। ये मिशनरियाँ चीन की परम्पराओं और उसकी धार्मिक और सांस्कृतिक महानता को नष्ट कर रहे थे। चीन के बुद्धिजीवी इनकी गतिविधियों से बहुत क्रुद्ध थे। उस समय चीन में ईसाई मिशनरियों के बारे में तरह-तरह की अफवाहें फैल रही थीं

Scanned with CamScanner

एक अफवाह यह भी थी कि इसाई धर्म के बच्चों की आँख निकाल लिया करते थे। लेकिन ही उसमें सच्चाई नहीं थी। किंतु जब चीन के लोगों के दिमाग में ऐसी बातें फैल रही तो उसे निकालना भी आसान नहीं था। चीन में इन इसाईयों के खिलाफ संगठन बन रहे थे। इन्हीं परिस्थिति में एक संगठन बना जो मुक्केबाजों का संगठन कहलाया। ये अपनी धर्म की ताकत में विश्वास करते थे। शुरू में इनका नारा था मंचुओं को हटाओ और विदेशियों का नाश करो। किन्तु जब मंचु सरकार ने इनके प्रति सहानुभूति दिखलायी तो इनका नारा हो गया मंचुओं की रक्षा करो और विदेशियों को नष्ट करो।

क्रमशः—